# INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES




**ISSN 2277 – 9809 (online)**
**ISSN 2348 - 9359 (Print)**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

# राजनीतिक दर्शन और भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन में महादेव गोविंद रानाडे का योगदान : एक राजनीतिक अध्ययन

**डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर**

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

## सार (Abstract)

महादेव गोविंद रानाडे (1842-1901) उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में भारतीय पुनर्जागरण एवं आधुनिक राजनीतिक चिंतन के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। वे न केवल न्यायविद और अर्थशास्त्री थे, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक बौद्धिक सूत्रधार तथा बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन एवं प्रार्थना समाज के केंद्रीय व्यक्तित्व भी थे। यह शोध पत्र रानाडे के राजनीतिक विचारों, उनके राज्य-विषयक सिद्धांतों, संवैधानिक सुधारों के प्रति उनके दृष्टिकोण तथा भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलनों में उनकी भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। रानाडे का दृष्टिकोण आधुनिक उदारवाद, क्रमिक सुधारवाद और नैतिक पुनरुत्थानवाद का संश्लेषित रूप था। उन्होंने स्पष्ट किया कि सामाजिक सुधार के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी और अस्थिर रहेगी। प्रस्तुत शोध पत्र में रानाडे के संस्थागत प्रयासों, उनके द्वारा संस्थापित संगठनों, तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं तथा ऐतिहासिक व अकादमिक साक्ष्यों के आधार पर उनके राजनीतिक व सामाजिक विचारों का मूल्यांकन किया गया है।

**मुख्य शब्द (Keywords):** महादेव गोविंद रानाडे, संवैधानिक उदारवाद, प्रार्थना समाज, पुणे सार्वजनिक सभा, भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन, सामाजिक सुधार आंदोलन, दक्कन कृषक राहत अधिनियम।

## प्रस्तावना (Introduction)

19वीं शताब्दी का उत्तरार्ध भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक युगान्तकारी कालखंड के रूप में चिह्नित किया जाता है। यह वह दौर था जब भारत में पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और औपनिवेशिक प्रशासनिक तंत्र के जटिल अंतरविरोधों के बीच एक आधुनिक बौद्धिक चेतना तथा संस्थागत राजनीति का बीजारोपण हो रहा था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् जब शासन की बागडोर ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर ब्रिटिश क्राउन के अधीन आई, तो भारत में पाश्चात्य शिक्षा, आधुनिक न्यायशास्त्र, नौकरशाही तंत्र और प्रेस के माध्यम से वैचारिक परिवर्तनों की एक नई लहर उत्पन्न हुई। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जिस वैचारिक धारा का अभ्युदय हुआ, उसे इतिहासकारों और राजनीतिशास्त्रियों द्वारा **"उदारवादी पुनर्जागरण" (Liberal Renaissance)** की संज्ञा दी गई।

इस बौद्धिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के अग्रदूतों में न्यायविद, अर्थशास्त्री और विचारक **महादेव गोविंद रानाडे (1842-1901)** का स्थान अत्यंत अग्रगण्य है। रानाडे का योगदान केवल सैद्धांतिक विमर्श तक सीमित नहीं

था, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज की विकृतियों और औपनिवेशिक आर्थिक-राजनीतिक व्यवस्था का अत्यंत व्यावहारिक व संश्लेषित अध्ययन प्रस्तुत किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि भारतीय समाज की प्रगति एकांगी (Piece-meal) नहीं हो सकती। समाज का कोई भी अंग अलग-थलग रहकर विकसित नहीं हो सकता; विकास की प्रक्रिया अनिवार्यतः सर्वांगीण (Comprehensive) होनी चाहिए। रानाडे का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता और सामाजिक सुधार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने इस विचार को अत्यधिक स्पष्टता से प्रतिपादित करते हुए कहा था: *"आप सामाजिक व्यवस्था में सुधार किए बिना राजनीतिक प्रगति नहीं कर सकते; और आप राजनीतिक सुधारों के बिना आर्थिक प्रगति नहीं कर सकते। यह सर्वांगीण सुधार ही जीवन का वास्तविक नियम है।"*

रानाडे का राजनीतिक दर्शन पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन और भारतीय नैतिक परंपराओं के एक अनूठे संश्लेषण पर आधारित था। एक ओर वे जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill) के व्यक्तिगत स्वतंत्रता व उपयोगितावाद तथा एडमंड बर्क (Edmund Burke) के इतिहासवाद और क्रमिक रूढ़िवादी-सुधारवाद (Conservatism and Gradualism) से गहरे प्रभावित थे; वहीं दूसरी ओर, उनका चिंतन महाराष्ट्र के मध्यकालीन भक्ति आंदोलन–विशेष रूप से संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर और नामदेव के नैतिक व मानवतावादी दर्शन से अनुप्राणित था। रानाडे ने तर्क दिया कि जिस समाज में जातिगत विभाजन, बाल विवाह, स्त्री-परतंत्रता और अस्पृश्यता जैसी जड़ सामाजिक कुरीतियां विद्यमान हों, वह समाज किसी भी प्रकार के राजनीतिक अधिकारों अथवा स्वशासन (Self-governance) का उत्तरदायित्व उठाने में सक्षम नहीं हो सकता। उनके अनुसार, सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति का कोई वैकल्पिक मार्ग नहीं, बल्कि उसकी अनिवार्य पूर्व-शर्त (Pre-condition) है।

इस प्रकार, रानाडे ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक केवल सत्ता-हस्तांतरण का आंदोलन न बनाकर उसे नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पुनरुत्थान का एक एकीकृत एवं संस्थागत आंदोलन बनाया। प्रस्तुत शोध पत्र रानाडे के इसी बहुआयामी चिंतन, उनके राज्य-विषयक सिद्धांतों और भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन में उनके ऐतिहासिक अवदान का एक वस्तुनिष्ठ व विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

## ऐतिहासिक एवं सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि

रानाडे का जन्म 18 जनवरी 1842 को निफाड (नासिक, महाराष्ट्र) में हुआ था। मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत वे न्यायपालिका से जुड़े और अंततः बॉम्बे हाई कोर्ट के न्यायाधीश पद तक पहुंचे -

### 1. तत्कालीन राजनीतिक व सामाजिक परिदृश्य

- **1857 की क्रांति के बाद का काल:** ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को सत्ता हस्तांतरण के बाद भारतीय समाज में कानूनी और प्रशासनिक बदलाव हो रहे थे।
- **सामाजिक कुरीतियां:** बाल विवाह, जातिगत भेदभाव, स्त्री शिक्षा का अभाव, और विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध जैसी कुरीतियां भारतीय समाज को पंगु बनाए हुए थीं।
- **बौद्धिक जागरण:** राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और ज्योतिराव फुले के प्रयासों से शुरू हुआ सुधार आंदोलन पश्चिमी भारत में रानाडे के नेतृत्व में अधिक संस्थागत और व्यापक रूप धारण कर चुका था।

## साहित्य पुनरावलोकन (Review of Literature)

महादेव गोविंद रानाडे के जीवन, विचारों और सामाजिक-राजनीतिक अवदान पर पूर्व में कई महत्वपूर्ण शोध एवं ग्रंथ लिखे गए हैं:

1. **पी. जे. जागीरदार (1963)** ने अपनी पुस्तक *'Studies in the Social and Political Thought of M. G. Ranade'* में रानाडे के राजनीतिक विचारों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। उन्होंने रानाडे को भारतीय संवैधानिक उदारवाद का जनक माना है, हालांकि उन्होंने उनके विचारों में पश्चिमी प्रभाव पर अधिक बल दिया है।
2. **रिचर्ड पी. टकर (1977)** ने *'Ranade and the Rise of Indian Nationalism'* में महाराष्ट्र के सामाजिक-राजनीतिक पुनर्जागरण में रानाडे की संस्थागत भूमिका (जैसे पुणे सार्वजनिक सभा) को रेखांकित किया है।
3. **विपन चंद्र (1966)** ने *'The Rise and Growth of Economic Nationalism in India'* में रानाडे के आर्थिक राष्ट्रवाद और राज्य की कल्याणकारी भूमिका पर उनके विचारों का गहन अध्ययन किया है।

## शोध अंतराल (Research Gap)

पूर्व में हुए अधिकांश अध्ययनों में रानाडे के **राजनीतिक विचारों** (संवैधानिक उदारवाद) और उनके **सामाजिक सुधारों** (प्रार्थना समाज, सामाजिक सम्मेलन) का अध्ययन अलग-अलग खंडों में किया गया है। रानाडे के इस मूलभूत दर्शन को पर्याप्त रूप से एकीकृत करके नहीं देखा गया कि *'सामाजिक सुधार के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता'*। प्रस्तुत शोध पत्र इस विषय पर केंद्रित है कि कैसे रानाडे का राजनीतिक चिंतन और उनका सामाजिक सुधार आंदोलन एक-दूसरे के पूरक और एकीकृत थे।

## शोध प्रश्न (Research Questions)

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित मुख्य प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है:

1. महादेव गोविंद रानाडे के राजनीतिक विचार तत्कालीन पश्चिमी उदारवाद से किस प्रकार भिन्न थे और उनका राज्य-विषयक दृष्टिकोण क्या था?
2. रानाडे ने भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन को किस प्रकार संस्थागत ढांचा (Institutional Structure) प्रदान किया?
3. रानाडे के अनुसार सामाजिक सुधार और राजनीतिक स्वतंत्रता के बीच क्या अंतर्संबंध था?
4. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में औपनिवेशिक शासन के संदर्भ में रानाडे के संवैधानिक तरीकों की क्या सीमाएं और उपलब्धियां रहीं?

## शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. रानाडे के राजनीतिक दर्शन, विशेषकर उनके संवैधानिक उदारवाद और राज्य की कल्याणकारी भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

2. प्रार्थना समाज और भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन के माध्यम से सामाजिक सुधारों में उनके ऐतिहासिक योगदान का मूल्यांकन करना।
3. रानाडे द्वारा स्थापित प्रमुख संस्थाओं (जैसे पुणे सार्वजनिक सभा) के माध्यम से राजनीतिक चेतना के विकास का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक व द्वितीयक साक्ष्यों के आधार पर रानाडे के सामाजिक-राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता और सीमाओं का निष्पक्ष परीक्षण करना।

## प्राक्कल्पना / परिकल्पना (Hypothesis)

1. महादेव गोविंद रानाडे का मानना था कि भारत में एक सुदृढ़ और स्थायी राजनीतिक संरचना का निर्माण केवल तब तक संभव नहीं है जब तक कि समाज में व्याप्त कुरीतियों, जातिगत भेदभाव और अशिक्षा का उन्मूलन करके सामाजिक पुनरुत्थान न किया जाए।
2. रानाडे का राज्य-विषयक सिद्धांत अहस्तक्षेप (Laissez-faire) की नीति का खंडन करता था और भारत जैसे पारंपरिक समाज में राज्य को सामाजिक सुधार व आर्थिक विकास का प्रमुख साधन मानता था।

## शोध का महत्व एवं आवश्यकता (Significance and Need of the Study)

1. **अकादमिक महत्व:** यह शोध आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन (Modern Indian Political Thought) के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए 19वीं शताब्दी के उदारवादी पुनर्जागरण को समझने में सहायक होगा।
2. **वैचारिक स्पष्टता:** यह अध्ययन इस भ्रांति का निवारण करता है कि प्रारंभिक उदारवादी केवल ब्रिटिश शासन के समर्थक थे। यह दर्शाता है कि रानाडे का दृष्टिकोण क्रमिक और संस्थागत राष्ट्रवाद की नींव रखने वाला था।
3. **समकालीन प्रासंगिकता:** वर्तमान समय में जब सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों पर व्यापक चर्चा हो रही है, तब रानाडे का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि नैतिक और सामाजिक सुधार के बिना राजनीतिक लोकतंत्र अधूरा है।

## शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र **'महादेव गोविंद रानाडे के राजनीतिक विचारों एवं भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन में उनके योगदान'** का एक विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक और गुणात्मक (Qualitative & Analytical) अध्ययन है। शोध की विश्वसनीयता और अकादमिक उच्चता बनाए रखने के लिए ऐतिहासिक और वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य निम्नलिखित पद्धतियों और स्रोतों का अवलंबन लिया गया है:

**(क) अध्ययन का उपागम (Approach)**

- **ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक उपागम (Historical-Analytical Approach):** रानाडे के विचारों को 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में रखकर विश्लेषित किया गया है।

- **संस्थागत उपागम (Institutional Approach):** रानाडे द्वारा स्थापित व संचालित संस्थाओं (पुणे सार्वजनिक सभा, प्रार्थना समाज, भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन) के कार्य-कलापों और राजनीतिक प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

**(ख) आंकड़ों एवं तथ्यों के स्रोत (Data Collection & Sources) -** शोध पत्र प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित हैं:

1. **प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):**
   - रानाडे द्वारा रचित मूल ग्रंथ एवं निबंध संग्रह, जैसे– *'Rise of the Maratha Power'* तथा *'Essays on Indian Economics'*।
   - रानाडे द्वारा संपादित एवं प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएं, विशेषकर **'पुणे सार्वजनिक सभा की तिमाही पत्रिका' (Quarterly Journal of Poona Sarvajanik Sabha)** (1878-1897)।
   - तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के विधायी दस्तावेज, जैसे– **दक्कन कृषक राहत अधिनियम (1879)** और **सहमति आयु अधिनियम (1891)** से जुड़े आधिकारिक अभिलेख।
2. **द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):**
   - आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन और इतिहास के प्रख्यात विद्वानों (जैसे– पी. जे. जागीरदार, बीपान चंद्रा, रिचर्ड पी. टकर, एस. ए. वोल्पर्ट) की शोध पुस्तकें और संदर्भ ग्रंथ।
   - अप्रैल 2015 से पूर्व विभिन्न पीयर-रिव्यूड (Peer-reviewed) अकादमिक जर्नल्स और शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध निबंध।

**(ग) तथ्य विश्लेषण एवं मूल्यांकन (Data Analysis) -** एकत्रित ऐतिहासिक एवं दस्तावेजी साक्ष्यों का निष्पक्ष और तार्किक विश्लेषण किया गया है, जिससे रानाडे के संवैधानिक उदारवाद, राज्य-विषयक सिद्धांतों और उनके सामाजिक सुधार अभियानों (जैसे प्रतिज्ञा आंदोलन) के वास्तविक प्रभावों का मूल्यांकन किया जा सके।

## रानाडे के राजनीतिक विचार (Political Thought)

महादेव गोविंद रानाडे का राजनीतिक दर्शन उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में उभर रहे उग्र या क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से भिन्न था। उनका राजनीतिक चिंतन मूलतः संवैधानिक उदारवाद और क्रमिक सुधारवाद के सिद्धांतों पर आधारित था। वे इस बात के पक्षधर थे कि राजनीतिक परिवर्तन अचानक या हिंसक क्रांतियों के माध्यम से आने के बजाय संस्थागत, कानूनी और नैतिक सुधारों के क्रमिक मार्ग से आने चाहिए। रानाडे के राजनीतिक दर्शन के मुख्य आधार स्तंभों को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है:

रानाडे का पहला मुख्य सिद्धांत संवैधानिक क्रमिकता था। उनका मानना था कि औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारत को अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए केवल संवैधानिक, अहिंसक और वैधानिक साधनों का ही आश्रय लेना चाहिए। दूसरा मुख्य सिद्धांत राज्य का कल्याणकारी दृष्टिकोण था। 19वीं शताब्दी के यूरोपीय राजनीतिक चिंतन में एडम स्मिथ और जॉन स्टुअर्ट मिल के प्रभाव के कारण राज्य के न्यूनतम हस्तक्षेप यानी अहस्तक्षेप की नीति का दबदबा था। यूरोपीय विचारकों का मानना था कि राज्य का कार्य केवल बाह्य सुरक्षा और आंतरिक शांति व्यवस्था बनाए रखना तक सीमित होना चाहिए। इसके विपरीत, रानाडे का मानना था कि भारत जैसे पारंपरिक, सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त और आर्थिक रूप से पिछड़े देश में राज्य को अहस्तक्षेप की नीति

छोड़कर एक सकारात्मक और कल्याणकारी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि राज्य केवल कानून व्यवस्था लागू करने वाली संस्था नहीं है, बल्कि वह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का प्रमुख अभिकर्ता है। इसी आधार पर उन्होंने शिक्षा के प्रसार, देशी उद्योगों के संरक्षण और बाल विवाह जैसी कुरीतियों पर अंकुश लगाने के लिए राज्य द्वारा कानून बनाए जाने का समर्थन किया। तीसरा मुख्य सिद्धांत सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की अनिवार्य संबद्धता थी। रानाडे का मानना था कि समाज के विभिन्न आयाम–सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक–एक-दूसरे से पृथक नहीं किए जा सकते -

### 1. राज्य की भूमिका और लोक कल्याण

रानाडे ने राज्य के सकारात्मक हस्तक्षेप के सिद्धांत को अत्यधिक स्पष्टता से प्रतिपादित किया। उनका मानना था कि भारतीय परिस्थितियों में राज्य का दायित्व केवल कर वसूलना या शासन चलाना नहीं था, बल्कि समाज के निर्बल वर्गों का संरक्षण करना भी था। जब 1870 के दशक में अकाल और कृषक असंतोष बढ़ा, तो रानाडे ने राज्य को यह याद दिलाया कि अकाल पीड़ितों को सहायता प्रदान करना और किसानों को महाजनों के शोषण से बचाना राज्य का प्राथमिक कर्तव्य है। उनका यह विचार आधुनिक 'कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) की अवधारणा का प्रारंभिक भारतीय संस्करण था।

### 2. संवैधानिक सुधार और ब्रिटिश शासन का मूल्यांकन

रानाडे ब्रिटिश शासन का मूल्यांकन अत्यंत व्यावहारिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में करते थे। वे ब्रिटिश साम्राज्य को भारत के लिए केवल शोषण का साधन मानने के बजाय उसे एक दैवीय अवसर के रूप में देखते थे। उनका तर्क था कि ब्रिटिश शासन ने भारत को मध्यकालीन राजनीतिक विखंडन से निकालकर प्रशासनिक एकता, आधुनिक न्यायशास्त्र, कानून के शासन और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों से परिचित कराया है।

हालांकि, इसका यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं था कि वे औपनिवेशिक शोषण के प्रति अंधे थे। वे ब्रिटिश शासन की त्रुटियों के आलोचक थे, लेकिन उनके विरोध का तरीका याचिका, स्मृति-पत्र, जनमत निर्माण और संवैधानिक संवाद का था। उनका मानना था कि इन माध्यमों से धीरे-धीरे ब्रिटिश संसद पर दबाव बनाकर भारत के लिए क्रमिक स्वशासन और प्रतिनिधि संस्थाओं का अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

### 3. राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण

रानाडे केवल सिद्धांतकार नहीं थे, बल्कि वे संस्थाओं के कुशल निर्माता और संचालक भी थे। 1870 में स्थापित पुणे सार्वजनिक सभा से जब वे 1871 में जुड़े, तो उन्होंने इस संस्था को महाराष्ट्र के प्रबुद्ध वर्ग और आम जनता के बीच संवाद का एक जीवंत माध्यम बना दिया। उन्होंने इस सभा के माध्यम से किसानों की समस्याओं, भूमि कर दरों, और अकाल राहत कार्यों पर विस्तृत सर्वेक्षण कराए और सरकार को ठोस ज्ञापन सौंपे। 1885 में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, तो रानाडे उसके अग्रणी संस्थापकों और विचारकों में से एक थे। यद्यपि बॉम्बे हाई कोर्ट का न्यायाधीश होने की कानूनी सीमाओं के कारण वे कांग्रेस के राजनीतिक मंचों से खुले तौर पर भाषण नहीं देते थे, लेकिन 1885 से

लेकर अपनी मृत्यु तक वे कांग्रेस के अनधिकृत बौद्धिक मार्गदर्शक बने रहे। कांग्रेस के प्रस्तावों के निर्माण और उसकी नीतियों को उदारवादी दिशा देने में उनकी भूमिका सर्वोपरि थी।

## भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन में योगदान

रानाडे का स्पष्ट मत था कि यदि कोई समाज अंदर से जर्जर, जातिगत द्वेष से विभाजित, अनैतिक और अमानवीय कुरीतियों से ग्रस्त रहेगा, तो उसे दी गई कोई भी राजनीतिक स्वतंत्रता टिकी नहीं रह सकती। उनके अनुसार, नैतिक और सामाजिक पुनरोद्धार के बिना राजनीतिक स्वशासन एक खोखला ढांचा मात्र रहेगा -

### 1. प्रार्थना समाज और धार्मिक पुनर्जागरण

1867 में मुंबई में स्थापित प्रार्थना समाज को वैचारिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान करने का श्रेय रानाडे को जाता है। रानाडे जानते थे कि भारत में सामाजिक सुधार तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि उन्हें धार्मिक और सांस्कृतिक स्वीकृति न मिले।

उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रार्थना समाज का उद्देश्य हिंदू धर्म से अलग होना नहीं है, जैसा कि कुछ अति-आधुनिक समूह प्रयास कर रहे थे, बल्कि इसका उद्देश्य हिंदू धर्म का आंतरिक शुद्धिकरण है। उन्होंने मूर्तिपूजा, कर्मकांडों और पुरोहितवाद के प्रभुत्व का विरोध किया और इसके विकल्प के रूप में एकेश्वरवाद की स्थापना की। अपने इस दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने महाराष्ट्र के मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का सहारा लिया। उन्होंने संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव और एकनाथ की शिक्षाओं को आधुनिक सामाजिक सुधारों का मुख्य आधार बनाया, जिससे प्रार्थना समाज का संदेश आम जनता के हृदय तक पहुंच सका।

### 2. भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन (Indian National Social Conference)

1887 में रानाडे ने भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन की स्थापना की। यह संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ही एक सामाजिक पूरक था और प्रतिवर्ष कांग्रेस के अधिवेशन के तुरंत बाद उसी मंडप में आयोजित किया जाता था। रानाडे का मानना था कि कांग्रेस जहाँ राजनीतिक मांगों पर ध्यान केंद्रित करेगी, वहीं सामाजिक सम्मेलन देश भर में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए काम करेगा।

इस सम्मेलन के अंतर्गत रानाडे ने प्रतिज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। यह बाल विवाह के विरुद्ध चलाया गया एक अनूठा और राष्ट्रव्यापी अभियान था। इसके तहत लोगों से औपचारिक और लिखित रूप से यह शपथ ली जाती थी कि वे अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह एक निश्चित न्यूनतम आयु से पहले नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त, इस सम्मेलन ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने, विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करने, अंतरजातीय विवाहों को मान्यता दिलाने, जाति-व्यवस्था के दमनकारी नियमों को शिथिल करने और समुद्र यात्रा पर लगे धार्मिक प्रतिबंधों को समाप्त करने के लिए निरंतर कार्य किया।

### 3. महिला अधिकार एवं सामाजिक न्याय

रानाडे का मानना था कि किसी भी समाज की सभ्यता और प्रगति की कसौटी उस समाज में महिलाओं की स्थिति होती है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और सम्मान की बहाली के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए।

1891 के सहमति आयु अधिनियम के समय जब बाल विवाह को लेकर देश में रूढ़िवादी और सुधारवादी धड़ों के बीच तीव्र विवाद छिड़ा हुआ था, तब रानाडे ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने प्राचीन धर्मशास्त्रों के उद्धरणों और आधुनिक मानवीय तर्कों का वैज्ञानिक समायोजन प्रस्तुत करके ब्रिटिश सरकार को यह विश्वास दिलाया कि विवाह की न्यूनतम आयु बढ़ाना धर्म विरुद्ध नहीं बल्कि मानवीय और शास्त्रीय दृष्टि से पूरी तरह उचित है।

इससे पूर्व, 1865 में उन्होंने विष्णुपरशुराम शास्त्री पंडित के साथ मिलकर विधवा पुनर्विवाह एसोसिएशन की स्थापना में सक्रिय योगदान दिया था। उन्होंने केवल कानून बनाने की मांग ही नहीं की, बल्कि उन विधवाओं के पुनर्वास, शिक्षा और समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए संस्थागत संरचनाएं निर्मित कीं।

## प्रमुख साक्ष्य एवं ऐतिहासिक आँकड़े (1870-1901)

रानाडे के योगदान को निम्नलिखित प्राथमिक और द्वितीयक ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं आँकड़ों के माध्यम से समझा जा सकता है:

| क्र.सं. | कार्य / संस्था | समय काल / वर्ष | प्रमुख आंकड़े एवं ऐतिहासिक तथ्य |
|---|---|---|---|
| 1. | **पुणे सार्वजनिक सभा पत्रिका** | 1878-1897 | रानाडे के संपादन में प्रकाशित क्वार्टरली जर्नल। इसमें भारत के अकाल, भूमि कर, और औद्योगिक स्थिति पर 50 से अधिक विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित हुए। |
| 2. | **दक्कन कृषक राहत अधिनियम** | 1879 | 1875 के दक्कन दंगों के बाद रानाडे द्वारा एकत्र किए गए आर्थिक आँकड़ों के आधार पर सरकार ने यह कानून बनाकर किसानों को महाजनों के शोषण से राहत दी। |
| 3. | **भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन** | 1887-1901 | रानाडे की अध्यक्षता में 14 वर्षों तक निरंतर राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन। 1890 के दशक तक इससे 50 से अधिक स्थानीय सुधार समितियां जुड़ चुकी थीं। |
| 4. | **प्रतिज्ञा आंदोलन (बाल विवाह विरोध)** | 1889 से आगे | देश भर के लगभग 10,000 से अधिक व्यक्तियों ने अपने बच्चों का बाल विवाह न करने का लिखित संकल्प लिया। |

## राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन

महादेव गोविंद रानाडे के राजनीतिक विचारों और सामाजिक योगदान का मूल्यांकन करते समय यह स्पष्ट होता है कि वे केवल अपने युग की समस्याओं के मूक दर्शक नहीं थे, बल्कि वे एक ऐसे राष्ट्र-निर्माता थे जिन्होंने आधुनिक भारत के वैचारिक और संस्थागत ढांचे की मजबूत नींव रखी। उनका चिंतन एकांगी न होकर समग्र था। उन्होंने भारतीय समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था और धर्म को एक-दूसरे से जुड़ी हुई इकाइयों के रूप में देखा और इनका एक एकीकृत विश्लेषण प्रस्तुत किया।

### 1. रानाडे का बहुआयामी सुधार मॉडल

रानाडे की सबसे महान बौद्धिक देन यह थी कि उन्होंने भारतीय पुनर्जागरण को किसी एक संकीर्ण दिशा तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि उसे एक व्यापक और बहुआयामी सुधार मॉडल का रूप

प्रदान किया। उनके इस एकीकृत मॉडल को चार प्रमुख वैचारिक स्तंभों के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है:

**पहला स्तंभ** सामाजिक सुधार का था। रानाडे का स्पष्ट मत था कि जब तक समाज की आधी आबादी यानी महिलाओं को कुरीतियों के जाल से मुक्त नहीं किया जाएगा, तब तक कोई भी राष्ट्र सशक्त नहीं हो सकता। उन्होंने बाल विवाह के कड़े निषेध, महिला शिक्षा के प्रसार, विधवा पुनर्विवाह के अधिकार और जातिगत उत्पीड़न के उन्मूलन को सुधार आंदोलन का केंद्रबिंदु बनाया।

**दूसरा स्तंभ** राजनीतिक चेतना का निर्माण था। उन्होंने भारतीय जनता को औपनिवेशिक शासन के समक्ष अपनी मांगों को रखने का एक नया और सभ्य मार्ग दिखाया। संवैधानिक याचिकाओं, स्मृति-पत्रों, जनमत संग्रह और संस्थागत संवाद के माध्यम से उन्होंने देश में एक संगठित और अनुशासित राजनीतिक संस्कृति को जन्म दिया, जिसने बाद में स्वतंत्रता आंदोलन को एक ठोस वैचारिक आधार प्रदान किया।

**तीसरा स्तंभ** आर्थिक स्वदेशी का विचार था। रानाडे केवल राजनीतिक और सामाजिक सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक भारतीय आर्थिक चिंतन के जनक भी थे। उन्होंने औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों की बारीकियों का अध्ययन किया और भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल आर्थिक विकास का मॉडल प्रस्तुत किया। उन्होंने केवल राजनीतिक नारों तक सीमित रहने के बजाय देश के भीतर औद्योगीकरण, कृषि में आधुनिक सुधारों, सहकारी साख प्रणालियों के विकास और स्वदेशी संसाधनों के संरक्षण पर बल दिया।

**चौथा स्तंभ** धार्मिक शुद्धता और नैतिक पुनरुत्थान था। रानाडे जानते थे कि भारतीय जनमानस में धर्म की जड़ें बहुत गहरी हैं। इसलिए उन्होंने धर्म को सामाजिक सुधारों के मार्ग में बाधा मानने के बजाय उसे सुधारों का प्रेरक बल बनाया। उन्होंने प्रार्थना समाज के माध्यम से एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा की, मूर्तिपूजा और आडंबरों का खंडन किया, तथा महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन के नैतिक मूल्यों को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुकूल पुनर्गठित किया।

## 2. सीमाएं एवं आलोचनात्मक पक्ष

रानाडे के अभूतपूर्व योगदान के बावजूद उनके राजनीतिक और सामाजिक विचारों की आधुनिक इतिहासकारो, राजनीतिशास्त्रियों तथा उनके समकालीन विद्वानों द्वारा निष्पक्ष समीक्षा की गई है, जिसमें कुछ प्रमुख सीमाएं रेखांकित होती हैं:

पहला आलोचनात्मक पक्ष उनके सुधार आंदोलनों का उच्च वर्गीय और भद्रवर्गीय दायरा था। रानाडे का कार्यक्षेत्र और उनकी संस्थाएं मुख्य रूप से शहरी क्षेत्र के शिक्षित और उच्च जातीय वर्ग, विशेष रूप से चितपावन ब्राह्मण वर्ग तक सीमित रहीं। उनके समकालीन महान सामाजिक क्रांतिधर्मा ज्योतिराव फुले और सत्यशोधक समाज ने रानाडे के प्रयासों की सीमाओं की ओर संकेत किया। फुले का तर्क था कि प्रार्थना समाज और भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन जैसे मंच निचली जातियों और अति-पिछड़े वर्गों के बुनियादी सामाजिक-आर्थिक उत्पीड़न, भूमि अधिकारों और जातिगत दमन के प्रश्नों को उस गहराई से नहीं उठा पाए, जितनी आवश्यकता थी।

दूसरा आलोचनात्मक पक्ष ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की न्यायप्रियता में उनका अत्यधिक विश्वास था। रानाडे का यह मानना कि ब्रिटिश शासन भारत के लिए एक दैवीय वरदान है और वे

संवैधानिक साधनों द्वारा धीरे-धीरे स्वशासन प्रदान कर देंगे, तत्कालीन परिस्थितियों में अत्यधिक आशावादी दृष्टिकोण था। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जब बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में अतिवादी या राष्ट्रवादी धड़े का उदय हुआ, तो उन्होंने रानाडे और अन्य उदारवादियों की इस नीति को भिक्षावृत्ति की राजनीति कहकर संबोधित किया। तिलक और उनके सहयोगियों का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए और इसे अंग्रेजों से संवैधानिक विनय के बजाय जन-आंदोलनों और अधिकार-दावों द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि सामाजिक सुधारों की प्रतीक्षा करने के बजाय पहले राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना आवश्यक है।

निष्कर्षतः, हालांकि रानाडे के दृष्टिकोण में कुछ सीमाएं थीं जो उनके वर्ग, शिक्षा और औपनिवेशिक सेवा की सीमाओं से उपजती थीं, फिर भी उनके इस योगदान को नकारा नहीं जा सकता कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को एक वैचारिक, नैतिक और संस्थागत मजबूती प्रदान की, जिसके बिना बाद के वृहद आंदोलनों का खड़ा होना संभव नहीं था।

## निष्कर्ष (Conclusion)

शोध कार्य के दौरान निर्धारित की गई प्राक्कल्पनाओं (Hypotheses) का ऐतिहासिक, दार्शनिक और संस्थागत साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणिकरण इस प्रकार है:

**(क) प्रथम प्राक्कल्पना का प्रमाणिकरण: सामाजिक सुधार और राजनीतिक संरचना का संबंध -** महादेव गोविंद रानाडे का यह दृढ़ विश्वास था कि भारत में एक सुदृढ़, स्थायी और उत्तरदायी राजनीतिक संरचना का निर्माण केवल तब तक संभव नहीं है जब तक कि समाज में व्याप्त कुरीतियों, जातिगत भेदभाव, बाल विवाह और अशिक्षा का पूर्ण उन्मूलन करके सामाजिक पुनरुत्थान न किया जाए।

- **प्रमाणिकरण (Verification):** इस प्राक्कल्पना की सत्यता रानाडे के उस ऐतिहासिक वक्तव्य से सिद्ध होती है जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया था कि सामाजिक दासता और आंतरिक अनैतिकता के साथ कोई भी समाज वास्तविक राजनीतिक स्वतंत्रता का निर्वाह नहीं कर सकता। उनके द्वारा स्थापित **'भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन'** और **'प्रतिज्ञा आंदोलन'** इस बात के प्रमाण हैं कि उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग के साथ-साथ सामाजिक सुधारों को अनिवार्य पूर्व-शर्त के रूप में स्थापित किया। अतः यह प्राक्कल्पना पूर्णतः प्रमाणित होती है कि रानाडे के लिए सामाजिक सुधार राजनीतिक मुक्ति का आधार थे।

**(ख) द्वितीय प्राक्कल्पना का प्रमाणिकरण: राज्य का कल्याणकारी दृष्टिकोण -** रानाडे का राज्य-विषयक सिद्धांत यूरोपीय शास्त्रीय अर्थशास्त्र की अहस्तक्षेप (Laissez-faire) की नीति का खंडन करता था और भारत जैसे पारंपरिक व पिछड़े समाज में राज्य को सामाजिक सुधार तथा आर्थिक विकास का प्रमुख साधन मानता था।

- **प्रमाणिकरण (Verification):** इस प्राक्कल्पना की पुष्टि उनके लेखों और 'दक्कन कृषक राहत अधिनियम (1879)' के संदर्भ में उनके प्रयासों से होती है। रानाडे ने ब्रिटिश भारत में यहूदी और यूरोपीय विचारकों के उलट यह तर्क दिया कि औपनिवेशिक या राष्ट्रीय सरकार को केवल कानून-व्यवस्था तक सीमित न रहकर समाज कल्याण, शिक्षा विस्तार, कृषक सुरक्षा और उद्योगों के संरक्षण

में सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। अतः यह प्राक्कल्पना भी अकादमिक साक्ष्यों के आधार पर सत्य सिद्ध होती है।

महादेव गोविंद रानाडे (1842-1901) उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के केवल एक साधारण न्यायविद् या अर्थशास्त्री नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक भारत के वैचारिक, संस्थागत और सामाजिक पुनरुत्थान के प्रमुख शिल्पी थे। इस शोध पत्र के संपूर्ण विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि रानाडे का राजनीतिक चिंतन पश्चिमी संवैधानिक उदारवाद (जैसे जॉन स्टुअर्ट मिल और एडमंड बर्क के विचार) तथा भारतीय परंपरा व मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के नैतिक मूल्यों का एक अनूठा और संतुलित संगम था। उन्होंने इस बात को गहराई से समझा कि राजनीतिक स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय एक-दूसरे के पूरक हैं। पुणे सार्वजनिक सभा, प्रार्थना समाज, और भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन जैसी संस्थाओं के माध्यम से उन्होंने वैचारिक बहसों को जमीनी संस्थागत स्वरूप प्रदान किया।

यद्यपि उनके सुधारों का दायरा कुछ हद तक उच्च वर्गीय और शिक्षित समाज तक सीमित रहा तथा ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता में उनका अत्यधिक विश्वास बाद के अतिवादी विचारकों (जैसे बाल गंगाधर तिलक) के लिए विवाद का विषय बना, फिर भी आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव रखने में उनका योगदान अद्वितीय है। रानाडे का यह संदेश कि स्थायी राजनीतिक परिवर्तन उग्र नारों से नहीं, बल्कि नैतिक परिपक्वता, संस्थागत मजबूती और सामाजिक सुधारों के दृढ़ आधार पर ही संभव है, आज भी अत्यधिक प्रासंगिक है।

## सुझाव (Suggestions & Recommendations)

महादेव गोविंद रानाडे के राजनीतिक दर्शन और उनके सामाजिक सुधार आंदोलनों के अध्ययन के आधार पर भविष्य के शोध और अकादमिक विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

1. **बहुआयामी और तुलनात्मक अध्ययन:** रानाडे के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन उनके समकालीन विचारकों (जैसे ज्योतिराव फुले, गोपाल कृष्ण गोखले और दादाभाई नौरोजी) के साथ और अधिक गहराई से किया जाना चाहिए, ताकि 19वीं सदी के महाराष्ट्र और भारत के वैचारिक अंतरविरोधों को निष्पक्ष रूप से समझा जा सके।
2. **आर्थिक राष्ट्रवाद का स्वतंत्र विश्लेषण:** रानाडे के आर्थिक विचारों–विशेषकर उनके 'प्रोटेक्टिव टैरिफ' (संरक्षणवादी नीति) और कृषि ऋण व्यवस्था के सिद्धांतों–को समकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था की नीतियों के संदर्भ में एक स्वतंत्र शोध विषय के रूप में अध्ययन किया जाना चाहिए।
3. **निचले स्तर तक सुधारों के प्रभाव का मूल्यांकन:** रानाडे द्वारा संचालित 'प्रतिज्ञा आंदोलन' और सामाजिक सम्मेलनों का प्रभाव शहरी भद्रलोक के बाहर ग्रामीण और marginalized (वंचित) वर्गों तक किस सीमा तक पहुंचा, इस पर सूक्ष्म ऐतिहासिक व समाजशास्त्रीय अनुसंधान की आवश्यकता है।
4. **पाठ्यचर्या में समावेशन:** आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन (Modern Indian Political Thought) के पाठ्यक्रम में रानाडे के 'कल्याणकारी राज्य' और 'सामाजिक-राजनीतिक संबद्धता' के सिद्धांतों को अधिक प्रमुखता से स्थान दिया जाना चाहिए ताकि नई पीढ़ी के विद्यार्थियों को भारतीय उदारवाद की वास्तविक गहराई का बोध हो सके।

## संदर्भ ग्रंथ सूची (References)


1. करवे, डी. जी. (1942). *रानाडे: द प्रॉफेट ऑफ लिब्रेटेड इंडिया,* आर्यभूषण प्रेस.
2. चंद्र, विपान. (1966). *द राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकोनॉमिक नेशनलिज्म इन इंडिया: इकोनॉमिक पॉलिसीज ऑफ इंडियन नेशनल लीडरशिप, 1880-1905*, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस.
3. जागीरदार, पी. जे. (1963). *स्टडीज इन द सोशल एंड पॉलिटिकल थॉट ऑफ एम. जी. रानाडे,* एशिया पब्लिशिंग हाउस.
4. मासेलोस, जिम. (1974). *टुवर्ड्स नेशनलिज्म: ग्रुप एफिलिएशंस एंड द पॉलिटिक्स ऑफ पब्लिक एसोसिएशंस इन नाइन्थीन सेन्चुरी वेस्टर्न इंडिया,* पॉपुलर प्रकाशन.
5. रानाडे, एम. जी. (1902). *राइज ऑफ द मराठा पावर एंड अदर एसेज,* फाटक.
6. रानाडे, एम. जी. (1906). *एसेज ऑन इंडियन इकोनॉमिक्स*, जी. ए. नटेसन एंड कंपनी.
7. टकर, रिचर्ड पी. (1977). *रानाडे एंड द राइज ऑफ इंडियन नेशनलिज्म,* यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.
8. वोल्पर्ट, स्टेनली ए. (1962). *तिलक एंड गोखले: रिवोल्यूशन एंड रिफॉर्म इन द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया.* यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

## ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

# MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

## PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

**ISSN 2321 – 9726**

**WWW.BHARTIYASHODH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

**ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)**

**WWW.IRJMST.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

**ISSN 2319 – 9202**

**WWW.CASIRJ.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

**ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)**

**WWW.IRJMSH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

**ISSN 2454-3195 (online)**

**WWW.RJSET.COM**

**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

**ISSN 2582-5445**

**WWW.IRJMSI.COM**

**JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH**

**WWW.JLPER.COM**